दिनांक 19 सितंबर 2025

हिंदी की रचनाओं पर केंद्रित काव्य पाठ/स्वरचित काव्यपाठ (कवि सम्मेलन)

दिनांक 19 सितंबर 25 को अटल बिहारी वाजपई हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा कुलगुरु एवं कुलसचिव जी के निर्देशन में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र जो वर्तमान में राष्ट्रीय कवि के रूप में प्रतिष्ठित उन्होंने कविता पाठ किया कविता के माध्यम से हिंदी, देश की एकता और अखंडता भाषा ,धर्म ,बेटी तथा अन्य प्रासंगिक विषयों पर रोचक कविताओं का पाठ किया कार्यक्रम के संयोजक डॉ गौरव कुमार गुप्ता तथा डॉ अनीता चौबे रहे विश्वविद्यालय के शिक्षक तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे कार्यक्रम का संचालन डॉ अनीता चौबे द्वारा किया गया ।

देवराज प्रजापति :

1.

नदी कह रही है ये डर मेरे अंदर
न हो जाऊ खारी मैं होके समंदर

बिछड़कर न फिर हम मिलेंगे दुबारा
पुनर्जन्म जैसी न कोई चीज चन्दर

तू हो एक देवी मैं तेरा पुजारी
इबादत करूं मैं बना एक मंदर

मुझे खा गया है तेरा दूर जाना
बता क्या करे बिन मदारी का बंदर

न डर है मुझे तो किसी बादशां का
मैं दो गज जमीं का अकेला सिकन्दर

सुनो देव तुम तो न काबिल जहां के
लगा भस्म माथे बनो तुम कलंदर

2.

न है होश तुमको न मुझको खबर है
मगर साथ दोनों तो दिल को न डर है

पकड़कर चलो तुम मेरा हाथ जाना
बहुत दूर मंजिल बहुत दूर घर है

लगेगा न तुम पर न इल्ज़ाम कोई
है शमशीर अपनी ये अपना ही सर है

बताते नहीं है पता आशना का
समझ लो इशारा निगाहें जिधर है

सभी लोग कहते के पंछी बचा लो
ज़रा इनसे पूछो की किसघर शज़र है

नीतेश व्यास

1.

जिंदगी रोशन है जिनसे ऐसा पावन नाम है।
सारे तीरथ वो ही है वो ही तो चारों धाम है।
मन के प्रश्नों में सदा उत्तर बनें सबके वहीं,
ऐसे मर्यादा के पालक अपने दाता राम है।

2.

जहां पर संस्कारों का सदा सम्मान होता है।
जहां अध्यात्म होता है जहां विज्ञान होता है।
अनेकों मत सभी के हैं सभी मिलकर के रहते हैं,
हमें भारत की भूमि पर बहुत अभिमान होता है।

3.

भारत के सच्चे सेवक थे,
ईमान का दूजा नाम थे।
मर्यादा यूं वर्णित थी,

कि लगता जैसे राम थे।
देश को प्रकाशित कर गये,
नेता नहीं रवि थे वो,
साहित्यिक सृजन के नायक,
ऐसे श्रेष्ठ कवि थे वो,
बार–बार जन्मे वो फिर से,
ऐसी सबकी आस है ,
राष्ट्र सृजन के नूतन पथ में ,
हरदम उनकी प्यास है।
राष्ट्रद्रोहियों को यूँ समझो,
सदा धधकते शोले थे।
परमाणु से प्रबल और वे ,
अंगारों के गोले थे।
वाणी से तो कोमल थे,
पर तेवर से चिंगारी थे।
अटल राष्ट्र के अटल पुरोधा,
ऐसे अटल बिहारी थे।

– गीत–

थोड़ा सा समय हम जो कहीं खुद पे खर्च करते,
तो लोग यार हमको गूगल में सर्च करते।
चैटिंग का जमाना है, सेटिंग का जमाना है
तारीख से न मलबत, डेटिंग का जमाना है
वायरल के वायरस से थोड़ा जो दूर रहते,
जीवन को फेसबुक के संग में न मर्ज करते
थोड़ा सा समय हम जो कहीं.....
विज्ञान में वेदों की भी शक्ति को जान लेते
भगवान भाव में है भक्ति को मान लेते
गीता के कर्मयोग की युक्ति का भान लेते
बैठे चौराहों पर हम, मस्जिद न चर्च करते
थोड़ा सा समय हम जो कहीं.....
रीलो से निकलके, किताब हम ज़ो बांच लेते
खुद की कमी सुधारते खुद को भी जांच लेते
इतिहास थोड़ा पढ़ते, सपनों के लिए लड़ते
दुनिया के लोग मिलकर हमपर रिसर्च करते
थोड़ा सा समय हम जो कहीं